B-2
L-14

दिनांक
10-11-23

⇒ 1857 का महाविद्रोह :-

स्थान	नेतृत्वकर्ता	विशेष
- दिल्ली	बहादुरशाह जफर	- वास्तविक नेतृत्व बख्त खां ने किया
- अवध/लखनऊ	बेगम हजरत महल (महक परी)	- इन्होंने अपने बेटे बिजरिस कादिर के नाम पर विद्रोह का नेतृत्व किया और चिन्हट के पास अंग्रेजों को भारी क्षति पहुंचाई और यहां तक कि कुछ ब्रिटिश सेनापति भी मारे गये। - विद्रोह के दमन के समय हजरत महल नेपाल की ओर चली गयी
- कानपुर	नाना साहब (दुंदु पंत)	- यहां वास्तविक नेतृत्व तात्या टोपे ने किया जिन्होंने गोरिल्ला पद्धति से अंत तक संघर्ष जारी रखा तथा विद्रोह को राजस्थान व नर्मदा क्षेत्र में भी प्रसारित किया, रंगा मित्र के विश्वास-घात से 1859 में इन्हें फांसी की सजा दी गयी।
रूहेलखण्ड/बरेली	खान बहादुर खान	- सेनापति कैम्पबेल ने बरेली, कानपुर व लखनऊ में विद्रोह का दमन किया।
आरा/जगदीशपुर	- बाबू कुंवरसिंह	- इन्होंने न सिर्फ अपनी जमींदारी क्षेत्र बल्कि गंगा घाटी के निचले क्षेत्रों को (दक्षिणी उत्तर प्रदेश) भी मुक्त कराने का प्रयास किया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Education Platform
KHAN SIR

झांसी	रानी लक्ष्मीबाई (मणिकर्णिका, मनु)	सेनापति ह्यूरोज ने इन्हें विद्रोहियों में एकमात्र मर्द कहा। - इनकी समाधि ग्वालियर में है।

⇒ 1857 के विद्रोह के बाद राजनैतिक प्रशासनिक परिवर्तन :-

- ईस्ट इण्डिया कंपनी से भारत का शासन ब्रिटिश क्राउन ने प्रत्यक्षतः अपने हाथों में ले लिया और गवर्नर जनरल की पदवी वायसराय कर दी गयी।

- 1784 के पिट्स इण्डिया एक्ट से भारत पर चला आ रहा दोहरा नियंत्रण समाप्त कर दिया गया और भारतीय शासन की देखरेख के लिए भारत राज्य सचिव के पद का सृजन किया गया जो एक समिति के माध्यम से शासन प्रबंध देखता था (लंदन में)।

- 1857 के विद्रोह में भारतीय राजाओं और नवाबों की सहायता से ही ब्रिटिश सत्ता बच सकी थी इसी सन्दर्भ में कैनिंग ने इन्हें तरंग अवरोधक कहा तथा रियासतों के साथ अधीनस्थ पार्थक्य की नीति के स्थान पर अधीनस्थ सम्मिलन की नीति को अपनाया और साथ ही भारत में साम्राज्य विस्तार न करने का निर्देश दिया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Trusted Learning Platform © KHAN SIR

- महाविद्रोह के बाद अंग्रेजों ने भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक मामलों में सतर्कता की नीति अपनाई और एक तरह से भारत के परम्परावादी व रूढ़िवादी वर्गों से समझौता कर लिया।
- सैन्य संरचना में परिवर्तन करते हुए ब्रिटिश सैनिकों का अनुपात बढ़ा दिया गया। पहले यह 5:1 था जो अब बदलकर 3:1 कर दिया गया और साथ ही सिख, गोरखा जैसी जातियों को मार्शल कॉम (लड़ाकू जाति) घोषित कर सैन्य एकता को भी प्रभावित करने का प्रयास किया गया।
- महाविद्रोह से यह स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश सत्ता को सबसे बड़ी चुनौती हिन्दू मुस्लिम एकता से है जैसा कि विद्रोह की तीव्रता के आधार पर सेनापतियों ने कहा था यह प्रथम और अंतिम अवसर है जब हम हिन्दू-मुस्लिम वर्ग को आपस में लड़ा नहीं सके। अतः अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो की नीति के आधार पर भारत में साम्प्रदायिकता का बीज बोना शुरू कर दिया।

+

Doubt Session